JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सावित्री बाई फुले :- नारीवाद की साक्षात मूर्ति

*** दीपिका यादव**
* * शिक्षाशास्त्र (M.A.), दो बार NET उत्तीर्ण
D.A.V. कॉलेज, सिविल लाइंस, कानपुर नगर ।
deepikaydv231@gmail.com

❖ **सारांश:-**

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है ।।

मशहूर गीतकार इंदिवर के गीत की ये कुछ पंक्तियाँ भारत की स्त्रियों की शक्ति को सारगर्भित करती हैं

समाज को सुधारने का बीड़ा जिस ने उठाया, समाज के ठेकेदारों ने उसके मार्ग में इतने कांटे डाल दिए कि इंसाफ और अधिकार की लड़ाई लड़ते- लड़ते उस व्यक्ति के पैर रक्त- रंजित हो गए, किंतु फिर भी सच्चाई की "मशाल" हाथ में लिए ये महान आत्माएं पृथ्वी पर आती थी, आती है और आती रहेंगी।

प्रस्तुत शोध पत्र आधारित है, ऐसी ही 18 वीं सदी की अति साधारण सी दिखने वाली किंतु साहसी, अप्रतिम दैवीय गुणों **से** सुशोभित कवयित्री, प्रथम अध्यापिका व समाज सुधारक **सावित्रीबाई फुले** पर । भारत की महान महिला नारीवाद सावित्रीबाई फुले ; जिन्होंने उस वक्त फैली कुरीतियों के खिलाफ स्वर मुखर किए। महिलाओं एवं दलितों की दयनीय दशा को सुधारने और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष पूर्ण जीवन जिया। दलितों व महिलाओं के साथ घोर अत्याचार को रोकने के लिये, उनको शिक्षित करने और सभी के समान अधिकार दिलाने के लिए, उन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया। सावित्री बाई ने कहा था-
"गरीबों व जरूरतमंदों के लिए हितकारी व कल्याणकारी कार्य शुरू किए गए हैं। मैं अपने हिस्से की जिम्मेदारी भी निभाना चाहती हूं। मैं आपको यकीन दिलाती हूं कि मैं आपकी हमेशा सहायता करूंगी। मैं कामना करती हूं कि ये ईश्वरीय कार्य अधिक लोगों की सहायता करेंगे।"

सावित्रीबाई ने अपना यह वचन अंतिम सांस तक पूरा किया। जब पूरा देश **प्लेग महामारी** की चपेट में आया तो सावित्री; अपने जीवन की चिंता किए बिना, लोगों के जीवन को बचाने में जुट गई। गाँव से दूर क्लीनिक में स्वयं तथा अपने दत्तक पुत्र यशवंत ; जो कि चिकित्सक था उसके साथ मिलकर रोगियों की सेवा में दिन-रात जुट गई । रोगियों के संपर्क में रहने से वो भी प्लेग महामारी की चपेट में आ गई और 10 मार्च, 1897 को वो **पंचतत्व** में विलीन हो गई।

❖ **उदेश्य :-**
1) महिलाओं व दलितों की शिक्षा में उनके अमूल्य योगदान का वर्णन ।
2) दलितों व महिलाओं की स्थिति को बेहतर करने में उनके **योगदान** का वर्णन ।

❖ **परिचय :-**

भारत वर्ष **में** आज से ही नहीं अपितु प्राचीन काल से महिलाओं को "देवी व शक्ति" का स्वरूप माना जाता रहा है। उनके **त्याग,** बलिदान, समर्पण, प्रेम तथा लोगों के देखभाल के अमूल्य गुण उनके **"देवी"** स्वरूप को सार्थकता प्रदान करते हैं।

मध्य काल में विदेशी आक्रान्ताओ के कारण महिलाओं के सम्मान व सुरक्षा में भारी क्षति हुई। महिलाएं "उपभोग" की वस्तु के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गई, फिर उनके साथ शुरू हुई अमानवीय प्रथाये जिसमें - सती प्रथा, पर्दा प्रथा, देवदासी प्रथा, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति इत्यादि थे। इन को खत्म करने में कई वर्षों का संघर्ष लगा और कुछ **तो** अभी भी विद्यमान है। उनका नाम व स्वरूप अवश्य ही बदला हो किंतु उनके पीछे की मानसिकता व दुष्प्रवृत्ति वैसी ही जीर्ण है। किसी भी बुरी प्रथा का जन्म "अशिक्षा" के कारण होता है। अशिक्षा ही किसी बुरी प्रथा को फलने- फूलने के लिए आश्रय प्रदान करती है; इसका विनाश सिर्फ ज्ञान के प्रकाश से ही संभव है ।

इससे भी दुःखदायी स्थिति थी, निम्न जाति में जन्मे लोगों की ; जिन्हें **"दलित"** कहा जाता था। जिनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया गया। प्राचीन काल का समय यदि देखा जाए तो हमारे ग्रंथों में निचली जाति के अपमान का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता है । उदाहरण के तौर पर यदि देखें तो व्यक्ति विशेष स्मृतियों को छोड़ कर, किसी भी महान ग्रंथ अर्थात वेद, पुराण या भगवान **ने** ऐसे भेदभाव को या जाति विशेष को महत्व नहीं दिया । उनके लिए सभी मानव बराबर है और महानता सदैव "कर्म" से होती है, जाति से नहीं। रामायण **में** रावण "ब्राह्मण" कुल में जन्मा था किंतु प्रवृत्ति उसकी राक्षसी थी अंततः श्री राम ने उसका वध किया और बुराई पर अच्छाई की जीत हुई। जातिभेद का विष इतना विषैला है कि आज तक इसे 21वीं सदी के आधुनिक लोग भी भोग रहे हैं। इन दंभी विचारधाराओं के विरोध में खड़ी हुई; सावित्रीबाई फुले जो निम्न जाति से संबंधित **थी** तथा एक स्त्री भी थी।

सावित्रीबाई फुले जी का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले **में** हुआ। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे पाटिल व माता का नाम लक्ष्मी था। **वो** अपने माता- पिता की प्रथम संतान थी । दलित परिवार में जन्म होने के कारण ऊंची जाति द्वारा अपमानित व पिछड़ों के प्रति हीन भावना से ग्रस्त जीवन उन्होंने जिया । बाल विवाह की प्रथा से सावित्रीबाई फुले भी अछूती न रह सकीं। उनका विवाह मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में 12 वर्ष के ज्योतिबा राव फुले के साथ कर दिया गया। समाज सुधारक पति का साथ पाकर सावित्री **भी** भारतीय समाज की कुत्सित विचारधारा के खिलाफ खड़ी हुई। अपने पति से सावित्री ने न केवल शिक्षा ली अपितु समाज सुधार के गुण भी ग्रहण किए। दोनों पति-पत्नी ने महिला शिक्षा व पिछड़ों की शिक्षा और अधिकार प्राप्ति में बहुत योगदान दिया। समाज में भारी विरोध, अपमान व कष्ट को सहने के बाद भी उनके कदम कमजोर नहीं पड़े। उन्होंने भारत की प्रथम "शिक्षिका" होने का गौरव प्राप्त किया। उन्होंने प्रथम "बालिका विद्यालय" खोला। विद्यालय का प्रारंभ मात्र 9 लड़कियों से किया गया। सावित्रीबाई फुले अपने पति के साथ मिलकर महिला व दलित शिक्षा के कार्य **में** पूर्णतः रम गई। सन 1858 में फुले के तीन स्कूल सिर्फ इस कारण बंद कर दिए गए क्योंकि ऊंची जाति वालों को दलितों तथा महिलाओं का शिक्षा लेना स्वीकार नहीं था । उन्होंने बाद के वर्षों में कुल 18 स्कूल खोलें। इसमें सभी जाति और वर्ग के लोगों का प्रवेश संभव था। उस समय ब्राह्मण जाति को दलितों व महिलाओं का शिक्षित होना रास नहीं आ रहा था और फिर संघर्ष का स्तर और दुष्कर हो गया। घर **से** निकलते वक्त सावित्रीबाई फुले पर पत्थर व कीचड़ फेंके गए उनको अभद्र बातें बोली गई किंतु इस पर भी सावित्रीबाई फुले का चट्टान सा साहस इंच मात्र भी नहीं डिगा ।

वह अपने पास अतिरिक्त साड़ी रखती थी। स्कूल जाकर गंदी साड़ी से बदलती थी। उनका कहना था - **" शिक्षा स्वर्ग का द्वार खोलती है, स्वयं को जानने का अवसर प्रदान करती है। "**

समाज के दबाव में आकर सावित्रीबाई के ससुर ने उनको और उनके पति को घर से बाहर निकाल दिया। अपार कष्ट सहने के बाद भी सावित्रीबाई फुले ने अपने खुद के बल पर तथा अपने पति के साथ कई महान कार्य किये। वे "महान समाज सुधारक" के रूप में विख्यात हो गई। उन्होंने समाज को उन्नत बनाने की दिशा में अविस्मरणीय कार्य किए। एक महिला का क्या कर्तव्य है? और वह अपने नारीवाद की परिभाषा किस प्रकार गढ़ सकती है; ये हर महिला को सावित्रीबाई फुले से सीखना चाहिए।

❖ **प्रमुख शब्द :-** महिला, शिक्षा, दलित।

- **महिलाओं की उन्नति व अधिकारों के लिए किए गए कार्य :-**

- **महिला शिक्षा :-**

सावित्रीबाई ने उस युग में जन्म लिया जब स्त्री शिक्षा व दलित शिक्षा दोनों ही वर्जित थे। सावित्रीबाई स्वयं "दो धारी तलवार" पर थी। एक तो स्त्री और ऊपर से दलित स्त्रियों की शिक्षा के लिए उन्होंने पहला कदम 1948 में; देश का प्रथम बालिका विद्यालय खोलकर बढ़ाया। वह कहती थी कि - **"एक सशक्त व शिक्षित स्त्री सभ्य समाज का निर्माण कर सकती है,** इसलिए **तुम्हारा भी शिक्षा पाने का अधिकार** होना **चाहिए। कब तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी रहोगी । उठो,** अपने अधिकार के **लिए संघर्ष करो"** ।

सावित्रीबाई फुले एक "दिव्य प्रकाश " की तरह थी। जिन्होंने स्त्रियों में स्वाभिमान का जोश भरा। यह बताया कि स्त्रियां भी पुरुषों के समान अधिकारी हैं। महिलाओं की शिक्षा के लिए उन्होंने सर्वाधिक प्रयास किये। सावित्रीबाई ने शिक्षिका का औपचारिक प्रशिक्षण पुणे से लिया था। वहां उन्हें फातिमा शेख मिली जो उनकी घनिष्ठ मित्र बन गई। उन्होंने महिला शिक्षा के अभियान में सावित्रीबाई फुले का भरपूर साथ दिया। फातिमा शेख, सावित्रीबाई फुले और सगुनाबाई तीनों ने मिलकर महिला शिक्षा के अभियान **में** अपना योगदान दिया। उन्होंने स्कूलों में ज्यादा उपस्थिति के उद्देश्य से छात्रवृत्ति भी शुरू की।

- **महिला सेवा मंडल :-**

समाज व धर्म की आड़ लेकर महिलाओं को दबाया जा रहा था। उनको बाहर निकलने तक की अनुमति नहीं थी । महिलाओं को जागरूक करने व उनमें आस-पास हो रही घटनाओं के प्रति सजग करने के उद्देश्य से "महिला सेवा मंडल" की स्थापना 1852 में सावित्रीबाई फुले **ने** की ।

- **बाल हत्या प्रतिभानक गृह :-**

उस समय गर्भवती, ब्राह्मण विधवा, महिलाएं व बलात्कार की शिकार महिलाओं को आश्रय देने के उद्देश्य से, 1863 में सावित्री बाई फूले तथा उनके पति ज्योतिबा राव फुले ने मिलकर इसकी स्थापना की। ऐसी महिलाएं अपने बच्चों को सुरक्षित जन्म देकर अपना नाम गोपनीय रखकर सम्मानित जीवन यहां जी सकती थी।

- **विधवा मुंडन पर रोक :-**

उस समय महिलाओं को पति की मृत्यु के साथ सती होना पड़ता था किंतु राजा राममोहन राय के प्रयासों से अंग्रेज गवर्नर विलियम बैंनटिक ने 1829 में सती प्रथा पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन अभी भी विधवाओं को सिर मुंडवा कर घर के किसी कोने पर अलग-थलग जीवन जीने को बाध्य कर दिया जाता था। सावित्रीबाई फुले ने इस "सिर मुंडवाने" की परंपरा का विरोध किया। वह अपने अब तक के सभी प्रयासों में उच्च जाति को समझाने में निष्फल रही थी। बदले में उन्हें घोर अपमान, अपशब्द, कई अमानवीय व्यवहार को सहना पड़ा था तब उन्होंने मुंबई और पुणे के नाइयो के साथ मिलकर इस "सिर मुंडवाने" की परंपरा के विरोध में हड़ताल की। इसमें नाईयों ने ही विधवाओ के मुंडन करने से इन्कार कर दिया था।

- **दलितों की उन्नति व अधिकारों के लिए किए गए कार्य :-**

- **श्रमिकों के लिए रात्रि विद्यालय :-**

सावित्रीबाई फुले जी का मानना था कि शिक्षा पर सबका अधिकार है क्योंकि शिक्षा ही सही और गलत **में** भेद करना सिखाती है। इसलिए श्रमिकों को शिक्षित करने के उद्देश्य से 1855 में "रात्रि विद्यालय" खोला गया। सभी किसान व मजदूर दिन में अपना काम करें और रात में पढ़ाई कर सकें। सावित्रीबाई फुले उनसे कहती थी - **"स्वाभिमान से जीने के लिए पढ़ाई करो क्योंकि पाठशाला ही इंसानों का सच्चा गहना है।"**

- **अस्पृश्यों (अछूत) के लिए कार्य :-**

सावित्रीबाई फुले का ऊंची जाति वालों से कहना था - **"तुम बकरी को सहलाते हो। "नाग पंचमी" में नाग को दूध पिलाते हो, लेकिन दलितों को तुम इंसान नहीं " अछूत" मानते हो ।"** वे अछूतों से कहती थी कि - **"आखिर कब तक तुम अपने ऊपर अत्याचार सहन करोगे? देश बदल रहा है। हम को भी बदलना होगा । "**

उस समय की अस्पृश्य कही जाने वाली **मंगल** और **महार** जातियों के लिए, उन्होंने बहुत काम किया। उनके बच्चों को स्कूल भेजने के लिए राजी करवाया। अछूतों को किसी सार्वजनिक कुएं से पानी पीने की इजाजत नहीं थी। सावित्रीबाई ने उनके लिए कुए खुदवाये ।

- **समाज सुधार के लिए व्यापक प्रयास** :-

सावित्रीबाई ने समाज में रहकर यह अनुभव किया कि किस प्रकार पुरोहित धर्म की आड़ लेकर दलितों को अपमानित करते हैं। उनको समाज में जानवरों से भी हीन जीवन जीने को मजबूर किया जाता है । उनका मंदिरों में प्रवेश वर्जित है, अच्छे वस्त्र, अच्छा रहन-सहन, अच्छा खानपान, और शिक्षा का अधिकार उन्हें नहीं है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था जो अपना वर्चस्व उस समय स्थापित किए हुए थी; किसी भी हालत में, ऐसे किसी भी जागरूकता की बयार को सहन नहीं कर सकती थी, जिससे नीची जाति के लोग उनके बराबर आ पाए। सावित्रीबाई ने बाल विवाह और भ्रूण हत्या तथा विधवा- पुनर्विवाह के समर्थन में कई व्यापक अभियान चलाए थे।

❖ **संबंधित साहित्यों का अध्ययन :-**

समस्त शोध पत्र सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष तथा उनके दर्शन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र का आधार लेखक एम.जी. माली की पुस्तक "क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले" तथा लेखक शांति स्वरूप बौद्ध की पुस्तक "क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की अमर कहानी" को बनाया गया है तथा समस्त विचार प्रस्तुत किए गए हैं । प्राप्त की गई समस्त जानकारियाँ आधिकारिक वेबसाइट व प्रमाणित पुस्तकों से ली गई है; जिनके विवरण संदर्भ में उल्लेखित किए गए हैं।

❖ **परिणाम व चर्चा :-**

सावित्रीबाई फुले का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। उन्होंने कभी भी अपने कर्तव्यों से मुंह नहीं मोड़ा। महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए जो लड़ाई उन्होंने शुरू की थी, वह आज तक जारी है किंतु आज भी महिलाओं और दलितों को उनके समस्त अधिकार प्राप्त नहीं हो पाए हैं। आज भी सरकारी नौकरियों में दलितों का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। ज्यादातर पदों पर आज भी उनका प्रतिनिधित्व न के बराबर है। हाँ, महिलाओं की स्थिति पहले से ठीक हुई है और उच्च शिक्षा में उनका नामांकन भी बढ़ा है।

संस्कृत में एक सुभाषित श्लोक है :-

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यंते, सर्वा स्तत्राफलाः क्रियाः । ।

भावार्थ :- जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात सम्मान व सत्कार होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग व उत्तम संताने होती हैं और जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, वहां उनकी समस्त क्रियायें निष्फल हो जाती हैं। प्रस्तुत श्लोक स्त्री सम्मान को अपरिहार्य इंगित करता है। इसके बावजूद महिलाओं के प्रति अपराध दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं, जो अत्यंत सोचनीय है। ये समूचे समाज का दायित्व है कि हमारे आसपास किसी भी प्रकार का, किसी के साथ भेदभाव न हो।

❖ **संदर्भ** :-

1) पुस्तक " क्रांति ज्योति सावित्री बाई फुले ", लेखक - श्री एम. जी. माली ; प्रकाशन : पब्लिकेशन डिविजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया |

2) पुस्तक "क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की अमर कहानी", लेखक- शांति स्वरूप बौद्ध ; प्रकाशन : सम्यक प्रकाशन।

3) पुस्तक "महान क्रांतिकारी नायिका - राष्ट्रमाता सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन", लेखक - श्री रमेश चंद्र येशनकर; प्रकाशन : बी एस पी के पब्लिशिंग कंपनी |

4) पुस्तक " सामाजिक क्रांति की योद्धा : सावित्रीबाई फुले, जीवन के विविध आयाम ", लेखक - डॉ. सिद्धार्थ ; प्रकाशन: दास पब्लिकेशन

5) पुस्तक "सामाजिक क्रांति की वाहक सावित्रीबाई फुले", लेखिका- सुशीला कुमारी ; प्रकाशन : प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ।

6) https://www.Jodhpurnationaluniversity.com

7) https://www.Jiwanparichay.in>

8) https://gurukul99.com

9) https://www.upboard.live